International Journal of Applied Research 2015; 1(7): 877-878

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(7): 877-878
www.allresearchjournal.com
Received: 24-05-2015
Accepted: 23-06-2015

डॉ. आशा उपाध्याय
व्याख्याता, संस्कृत विभाग, से.मु. मा.राज. कन्या महाविद्यालय, भीलवाड़ा, राजस्थान, भारत

Correspondence:
डॉ. आशा उपाध्याय
व्याख्याता, संस्कृत विभाग, से.मु. मा.राज. कन्या महाविद्यालय, भीलवाड़ा, राजस्थान, भारत

मृच्छकटिकम् में वर्णित गणिका जीवन और वेश्यावृत्ति

डॉ. आशा उपाध्याय

प्रस्तावना

मानव आरम्भ से ही कलाप्रेमी रहा है। नृत्य, संगीत और वादन कलायें ऐसी है जिन की ओर उसकी रूचि स्वाभाविक है। स्त्रियों का कण्ठ मधु होता है फिर भी इस कला के लिये अभ्यास की आवश्यकता है।

वेश्या शब्द की व्युत्पत्ति है – वेशेन पण्ययोगेन जीवति इति वेश्या। यह शब्द गणिका, रण्डी अथवा बाजारू स्त्री के लिये प्रयुक्त होता है। याज्ञवल्क्य–स्मृति में इसकी चर्चा आयी है। इससे ज्ञात होता है कि स्मृतिकाल में भी स्त्रियों का एक निम्न वर्ग था जो धनी पुरूषों के मनोरंजन के लिये संगीत–वादन एवं नृत्यकला का प्रदर्शन करता था। आगे चलकर यही वर्ग आमोद–प्रमोद का साधन बन गया। वेश्या और गणिका में भी अन्तर समझा जाता है। वेश्यायें अपने रूप यौवन द्वारा धन कमाने वाली मानी जाती थी तो गणिकाएं विशेष रूप से गाने और नाचने की कला का ही प्रदर्शन करती थी। इस विषय पर विशेष प्रकाश दशरूपक के टीकाकार ने डाला है। उन्होंने कहा कि :–

"वेशोभृतिः, सोऽस्या जीवनमिति वेश्या। चेद्विशेषों गणिका।[2]"

सामान्य वेश्याओं में श्रेष्ठ, रूप , शील और गुणों से युक्त वेश्या गणिका कहीं जाती थी। वर्तमान काल में ऐसा कोई विशेष वर्ग देखने में नहीं आता, अतः सब वेश्याएं कही जाती है। मृच्छकटिक की नायिका वसन्तसेना जन्म से गणिका है पर उसका आचरण कुलजा जैसा है। वह इस कर्म से घृणा करती है और अपना जीवन एक कुलीन सती नारी की तरह आर्य चारूदत्त से विवाह करके बिताना चाहती है।

मृच्छकटिक में अधिकतर वसन्तसेना के लिए गणिका शब्द का प्रयोग किया गया है। कुछ स्थानों पर ही उसे वेश्या कहा गया है। गणिका और वेश्याओंसे सम्बन्ध समाज की दृष्टि में अच्छा नहीं माना जाता है। यहीं कारण है कि नवम अंक में न्यायाधीश चारूदत्त से पूछते है – आर्य गणिका तब व मित्रम् ? तो चारूदत्त लज्जित हो जाता है। अतः यह निश्चय है कि वेश्याओं को समाज में अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता था। विदूषक ने भी कहा है –

गणिका जूते में पड़ी हुई कंकड़ी के समान है जो बड़ी कठिनाई से निकाली जा सकती है। [6]

मृच्छकटिककाल में गणिकाएं बड़ी सम्पन्न थी। उनके अपने विशाल भवन थे जिनमें सुख–समृद्धि की सभी सामग्रियां उपलब्ध थी। वे हाथी भी रखती थी। विदूषक ने वसन्तसेना के दूसरे प्रकोष्ठ को देखते हुए कहा है :–

इधर महावतों द्वारा भात से गिरे हुए तेल (लक्षणा से घी) से मिश्रित पिण्ड हाथी की खिलाया जा रहा है।[7]

इस प्रकार वसन्तसेना के बहुत वृतान्त वाले मानव, पशु, पक्षी युक्त आठों प्रकोष्ठों को देखकर मुझे सचमुच विश्वास हो गया है कि मैंने एक ही जगह स्थित स्वर्ग, मर्त्य एवं पाताल लोकमय त्रिभुवन को देख लिया है।

गणिका अथवा वेश्या वर्ग को यह सारा धन आमोद–प्रमोद में मस्त धनिक वर्ग से प्राप्त होता था। इन वेश्याओं को धनिकों के धन से प्रेम था न कि धनी व्यक्तियों से।

धनिकों का सारा धन अपहरण करके ये उनसे अपना सम्बन्ध समाप्त कर देती थी।

विदूषक ने भी कहा है :–

निर्धन कामुकों को अपमानित करने वाली वेश्या जैसी स्त्रियां निन्द्य है।[3]

विटने भी इस सम्बन्ध में वसन्तसेना से संभाषण करते हुए अपने मनोगत विचार व्यकत किये है –

तरूण जनसहायश्चिन्त्यतां वेशवासो
विगणय गणिका त्वं मार्गजाता लतेव।
वहसि हि धनहार्यं पण्यभूतं शरीरं
सममुपचर भद्रे सुप्रिय चाप्रियं च।।[4]

युवकों से सेवित वेश्यालय को स्मरण करो। पथ में उत्पन्न होने वाली लता के समान तुम अपने को समझो। बाजार में धन देकर खरीदी जाने वाली वस्तु के समान तुम देह धारण करती हो अतः रसिक और अरसिक दोनों के साथ समान व्यवस्था करो।
और भी

वाप्यां स्नाति विचक्षणों द्विजवरों मूर्खोऽपि वर्णाधमः,
फुल्लां नाम्यति वायसोऽपि हि लतां या नामिता बहिंणा।[5]

विद्वान ब्राह्मण तथा नीच मूर्ख भी तालाब में स्नान करते है। जिस विकसित लता को मयूर ने झुकाया है उसी को कौआ भी झुकाता है। जिस नौका से ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य पार उतरते है उसी से शूद्र आदि भी पार होते है। तुम वेश्या हो और तालाब, लता तथा नौका के तुल्य हो, अत एवं प्रत्येक मनुष्य का तुम समान आदर करो।
चारुदत्त ने भी कहा है :–
'यस्यार्थास्तस्य सा कान्ता धनहार्यो ह्यसो जनः" । पूर्वार्ध जिसकी संपत्ति है उसी की वह कामिनी है क्योंकि यह गणिका समुदाय तो धन के वशीभूत है।
सभ्य पुरुषों के गृहों में गणिकाओं के लिए प्रवेश की आज्ञा न थी। इससे वे मन ही मन अपना बड़ा अपमान मानती थीं। चारुदत्त द्वारा रदनिका के रूप में समझी जाने वाली वसन्तसेना ने स्वयं कहा है :–
तुम्हारे अंतःपुर के प्रवेश के लिए में मन्दभागिनी हूँ।
कभी कभी अवांछित पुरुषों द्वारा में गणिकायें और वेश्यायें बलात् बाधाओं और खतरों में भी पढ़ जाती थीं। गणिकायें कलाओं में प्रवीण थीं । वसन्तसेना का चतुर्थ प्रकोष्ठ इसका प्रतीक है।
इस वसन्तसेना ने नाट्यशाला में प्रवेश तथा कलाओं की शिक्षा के द्वारा दूसरों के ठगने की कुशलता के कारण स्वर–परिवर्तन में निपुणता प्राप्त कर ली है। चारूदत्त ने भी गणिकाओं के पुरुषों के समक्ष बहुत बोलने की निन्दा करते हुए वसन्तसेना के विषय में कहा है–

पुरुष परिचयेन च प्रगल्भं,
वदति यद्यपि भाषते बहूनि ।

यद्यपि यह गणिका है और बहुत बोलने वाली है तथापि मेरे जैसे पुरुषों की उपस्थिति में पृष्टता से नहीं बोलती है।
वेश्याओं के सम्बन्ध में जनसाधारण की ये धारणायें अवश्य थी पर गणिका वसन्त सेना इसका उपवाद थी। वह धन के आगे गुणों का मूल्य आंकती थी। धन का उसकी दृष्टि में कोई महत्व न था। विट द्वारा वेश्यावृत्ति से सम्बन्धित विवेचन सुनकर वसन्तसेना ने कहा है –

प्रेम का वास्तविक कारण गुण है न कि बलात्कार।[8]

चारूदत्त ने भी इसका समर्थन किया है :–

"गुणहार्यों ह्यासौ जनः।"

यह वसन्त सेना गुणद्वारा वष में करने योग्य है।
स्च है वसन्तसेना ऐसी ही थी। उसने अपनी माता का यह संदेश पाकर कि राजा का साला संस्थानक दस हजार सुवर्ण के आभूषणों को देकर उस ले जाने की प्रतीक्षा में है, अपनी माता से कहने के लिए उसने मुंह तोड़ उत्तर दिया है।
यह कहना – यदि मुझे जीवित चाहती हो तो मुझे माताजी के द्वारा फिर आज्ञा न मिलनी चाहिए।
वेश्यावृत्ति से वसन्तसेना को कितनी घृणा थीयह इसे स्पष्ट हो जाता है। उसकी कुलवधू होने की दबी हुई लालसा उस समय स्पष्ट हो जाती है ज बवह मदनिका को वधू रू‍ में शर्विलक के साथ सानन्द बिदा करती है। वसन्त सेना ने मदनिका को गाड़ी पर चढ़ाते हुए कहा हैः–
अब तुम ही वन्दनीय हो गई हो।
कभी–कभी राजाओं की ओर से वेश्याओं को उनके अच्छे गुणों के कारण कुलवधू की प्रेरणा मिलती थी और तब वे अपने इच्छानुसार नियमानुकूल विवाह कर सकती थी।

शर्विलक ने वसन्तसेना से यही व्यक्त किया है :–

"आर्य वसन्तसेने, परितुष्टो राजा भवतीं वधूषब्देनानुगृह्लति।"

आर्ये वसन्तसेना, प्रसन्न हुए राजा आपको वधूषब्द से अनुगृहित करते है।

निष्कर्ष

मृच्छकटिककार ने इस प्रकरण में वेश्याओं की समृद्धि दिखाई है पर साथ ही तत्कालीन वेश्यावर्ग समाज की दृष्टि में हीन जीवन बिताने की अपेक्षा विवाहित जीवन बिताकर कुलवधू के रूप को मान्यता देता था। मनोरंजन एवं नाट्यसंगीत का माध्यम तो ये चिरकाल से रही है। उच्च कोटि के आदर्श स्वस्थ समाज में ही, वेश्यावृति की समाप्ति कदाचित सम्भव है।

सन्दर्भ

1. याज्ञवल्क्यस्मृति – 1.141
2. दशरूपकम् – 3.41
3. मृच्छकटिकम – प्रथम अंक
4. मृच्छकटिकम् – 1.31
5. मृच्छकटिकम् – 1.32
6. मृच्छकटिकम् – पंचम अंक
7. मृच्छकटिकम् – चतुर्थ अंक
8. मृच्छकटिकम् – प्रथम अंक
9. मृच्छकटिकम् – 1.56
10.